Final Year Examination of the Three-year Degree Course,2001

RAJSTHANI SAHITYA
Paper-I
(प्रथम प्रश्न-पत्र)
Gadya
(गद्य)

Time : Three Hours
Maximum Marks: 100

1. अधोलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **30**

(क) औ संसार सगळो एक राज रस्तो है। ई पर मानखो अर दूसरी जियाजूण आपरै पूर्वलै संस्कारां रै ऊंठा पर आपां जियां ही आवै-जावै, जिकै सूं जी री टक्कर लागणी लिख्योड़ी हुवै बा लागै ही चावै विवेक री मौरी कित्ती ही सांभी राखो -जिका धींगाणै ही मांय आय पडै बांनै धक्को तो देणो ही पड़ै सुगनी, पण म्हारे जीवण में इसौ औ पैलौ ई मौकौ हुवै अर तै ही एढ़ै लगवाया हुवै आ सोच जाण-बुझ'र हित्या क्यों मोल लै। आपणौ हुवै चावै पारकै रौ आउखो खूट्यॉं कारी है कठै ही?

अथवा

कुदरत रो बोपार अणन्त है। बो दिन रात आछो भूंड़ो आपरै मतै आपरी चाल सूं चालै। बो कींरो दखल को चावैनीं। बीरै न कोई आपरो न परायो। न कींनै ही नफो कराणो चावै न कीनै ही नुकसाण-चालै ज्यूं चालै आपरै मतै। पण बो बोपार सगळै जीवां नै एकसो फळापै आ कियां हुवै ? कुदरत रा जीव जिका बीरै घणा नैड़ा है -बीरी सैन में घणा समझै। जिका बीसूं घणा अळगा है, बै साव थोडा। नैडै सूं मतळब जिका कुदरत रै बोपार रो विरोध कर इन्द्रयां री सैज गति में बाधा नहीं नांखै-दूघड़ चिन्तावां अर घाई-घूंती सूं काळजै नै भरै नहीं।

(ख) जिण भांत मिनख धरती री सन्तान है, उणीज भांत दूजा चर अर अचर जीव भी धरती री ई सन्तान है। सगळा उणी सूं जलम धारण करै अर उणरै रस सूं ई बडा हुवै। तो पछै मिनख अर देस रा पशु/पंखी, तथा पेड-पौधा भी स्वभाव सूं ई भाई-बन्धु हुयगा। आपरा भाई-बन्धु तो सगळां नै ई प्यारा लागै। जिकै मिनख नै आपरी धरती रो रूप आ उणरा बिरछ-घास तथा पसु-पंखेरू प्यारा कोनीं लागै, बो मिनख-रूप धारण कर्योडो जड पदारथ ई समझो।

अथवा

भारत री आजादी में भी आज बोरड़ी आळी ई बीत रैयी है। आजादी नै रूखाळै कोई कोनीं अर ईनैं लूटबा में सगळा लागरया है। ई री साख रो लाभ तो सगळा लेवणौ चावै पण ईनै सींचै कोई कोनीं। दिन-दिन आजादी री बोरड़ी दूबळी पडती जावै है। ऊपर सूं पंखेरूवां री डार लूम रैयी है अर तळै भारतमाता रा बेटा मार-मार भाठा काचा-पाका सगळा बोर झाडण में लागर्या है। तो पछै आ आजादी री बोरड़ी कितरा दिन खड़ी रैवसी?

(ग) ते राजा नरिसंघदास सारीखा। बत्तीस सहस साहण रिण-खेति मेल्हि चाल्यउ। मदोनमत्त हस्ती मेल्हि चाल्यउ। आपण जाइ समंदइ घाल्यउ। समंद जाइ खांडउ पखालियउ। अनेक राइ मद्गलित करि मेल्ह्या। देस तउ कवण-कउण? सतियासी नमियाड जुग मानधाता आसेरि दूगउर सिलारपूर लगइ का कटक बंध। मझ देस मउ मांडवधार उजीण सीह खंड-खड का नगर-नगर का खान मीर अमराव चतुरंग दळ चढ़ि चाल्या पातसाह आपुणपउ पलाण घल्या।

अथवा

इसउ हिन्दू राजा उपकंठि कउण छइ जिकइ मन पातिसाह को रीस वसी, कउण का माथा तइं खिसी? कउण हद दई रूठउ ? कउण को माई विवाणी, जू सामउ रहइ अणी पाणी ? आजु तउ सोम सातल कान्हड़दे नहीं तिलक छपरि तउ गहिलउतु नहीं, सींहउरि रउळु नहीं, हठ कउ राउ हमीर आथ्म्यउ। अउर पातिसाह हुवा आला आगिलेरा, अर भला भलेरा।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com

2. 'मैकती काया: मुळकती धरती' उपन्यास में चित्रित लेखक के मूल उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। 18

अथवा

अन्नाराम सुदामा की भाषा/शैली की युक्तियुक्त समीक्षा कीजिए।

3. 'रोहीड़ै रा फूल' निबन्ध-संग्रह की प्रमुख विशेषताएं बताइए। 18

अथवा

'बगीचै रो कागलो' निबन्ध में अनूठी व्यंग्यात्मक दृष्टि की झलक मिलती है। इस कथन को सिद्ध कीजिए।

4. 'अचळदास खीची री वचनिका' में इतिहास और साहित्य का मणिकांचन संयोग लक्षित होता है।' इस कथन की सप्रमाण विवेचना कीजिए। 18

अथवा

'वचनिका' की परिभाषा स्पष्ट करते हुए राजस्थानी वचनिकाओं पर एक सारगर्भित टिप्पणी लिखिए।

5. आधुनिक राजस्थानी गद्य की प्रमुख प्रवृतियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 16

अथवा

राजस्थानी गद्य की कौन-सी विधा आपको सर्वाधिक प्रिय है और क्यों? स्पष्ट कीजिए।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com